**अपराह्न 2.32 बजे**

*तत्पश्चात लोक सभा अपराह्न तीन बजे तक के लिए स्थगित हुई।*

---

**अपराह्न 3.00 बजे**

*लोक सभा अपराह्न तीन बजे पुनः समवेत हुई।*

[**अध्यक्ष महोदया** *पीठासीन हुईं*]

## प्रधानमंत्री द्वारा वक्तव्य

## जापान में आए भूकंप और सुनामी

*[अनुवाद]*

**प्रधानमंत्री (डा. मनमोहन सिंह)** : अध्यक्ष महोदया, जैसा कि माननीय सदस्यगण जानते हैं कि 11 मार्च को जापान के पूर्वोत्तर हिस्से में विनाशकारी भूकंप और सुनामी आई है।

टेलीविजन चैनलों उपर विनाश और मानवीय त्रासदी की तस्वीरें दिखाई जा रही हैं। ये तस्वीरें ह्रदय-विदारक और विचलित करने वाली हैं। यह स्पष्ट होता जा रहा है कि भारी विनाश और मानव त्रासदी का यह परिमाण अनुमान से बहुत अधिक होने की संभावना है। यह जापान के लिए बड़ी ही गंभीर त्रासदी की घड़ी है।

मैंने भारत सरकार और भारत की जानता की ओर से जापान के प्रधान मंत्री को पहले ही अपनी संवेदनाएं व्यक्त कर दी है। मैंने उन्हें बताया है कि संकट की इस घड़ी में भारत की जनता जापान के लोगों के साथ खड़ी है। हमारे संसाधन जापान की मदद के लिए हैं। उन्हें जो भी मदद चाहिए, भारत उसके लिए तैयार है।

मुझे यकीन है कि यह सदन मेरे साथ मिलकर भारत की जनता की ओर से जापान की सहृदय जनता के लिए हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करेगा और इस सबसे भयानक आपदा में उनके लिए प्रार्थना करेगा।

महोदया, हम यह कभी नहीं भूल सकते कि जापान द्वारा विदेशामें विकास के लिए दी जाने वाली सबसे अधिक सहायता भारत को मिलती रही है। हम जापान सरकार के संपर्क में हैं, ताकि उनकी जरूरत के अनुसार हम उन्हें सहायता उपलब्ध करा सकें। एक तात्कालिक कदम के रूप में, हम जापान को 25,000 कंबल भेज रहे हैं। हम खोजी और बचाव दल तथा राहत सामग्री भेजने के लिए तैयार हैं। हम राहत, पुनर्वास और पुनर्निर्माण में मदद देने के लिए भी तैयार हैं। इस तरह के कार्यों के लिए हमारी नौसेना ने जापान को उअपनी जहाज़ें भेजने के लिए तैयार रखे हुए हैं।

इस आपदा से उत्पन्न स्थितियों से निपटने के लिए जापानी अधिकारियों को मदद देने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

जापान में लगभग 25,000 भारतीय रह रहे हैं। इनमें से अधिकांश सुनामी से प्रभावित इलाकों में नहीं रह रहे थे। लगभग 70 भारतीय सुनामी प्रभावित क्षेत्रों में जापानी अधिकारियों द्वारा लगाए गए तंबुओं में रह रहे हैं। हम उनकी कुशल-क्षेम पर निगरानी रखे हुए हैं। अभी तक हमें किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं मिली है।

इस आपदा से जापान में कुछ परमाणु विद्युत संयंत्र प्रभावित हुए हैं। भारत सरकार अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी, जापानी परमाणु उद्योग फोरम और वर्ल्ड एसोसियेशन ऑफ न्यूक्लियर ऑपरेटर्स के साथ लगातार संपर्क बनाए हुए है।

महोदया, भारत में इस समय 20 परमाणु विद्युत संयंत्र काम कर रहे हैं। इनमें से 18 स्वदेशी प्रेशराईज्ड हेवी वॉटर रिएक्टर्स हैं। तारापुर में 2 रिएक्टर्स, टैप्स-1 और टैप्स-2 बॉइलिंग वॉटर रिएक्टर्स हैं। ये रिएक्टर्स वैसे ही हैं, जैसे कि जापान में संचालित किये जा रहे हैं। इन रिएक्टर्स की सुरक्षा जांच हाल ही में पूरी कर ली गई है। भारतीय परमाणु संयंत्र विगत में सुरक्षा मानकों पर खरे उतरे हैं। भुज में 26 जनवरी, 2002 को आए भूकंप के बाद काकरापार परमाणु विद्युत केन्द्र बिना किसी रूकावट के सुरक्षित रूप से काम कर रहा है। 2004 में सुनामी आने के बाद, मद्रास परमाणु विद्युत केन्द्र को बिना किसी रेडियोधर्मिता के खतरे के सुरक्षित रूप से बंद कर दिया गया था। नियामक समीक्षा के बाद कुछ दिनों में इसे फिर से चालू कर दिया गया था।

मैं सदन के माननीय सदस्यों को आश्वस्त करना चाहूंगा कि सरकार परमाणु सुरक्षा को सर्वोच्च महत्व देती है। परमाणु ऊर्जा विभाग और इसकी एजेंसियों, जिनमें भारतीय परमाणु विद्युत निगम भी शामिल है, को निर्देश दिये गये हैं कि वे हमारे परमाणु विद्युत संयंत्रों की सभी सुरक्षा प्रणालियों की तत्काल समीक्षा करें, ताकि विशिष्टतया यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे सुनामी और भूकंप जैसी बड़ी प्राकृतिक विपदाओं के प्रभाव को झेलने में सक्षम रहें है।

मैं सदन को यह भी सूचित करना चाहूंगा कि भारत के राष्ट्रीय परमाणु सुरक्षा नियामक प्राधिकरण को ओर मजबूत करने की दिशा में परमाणु ऊर्जा विभाग में कार्य चल रहा है।

---